DR Krishnadeo kumar bharti
Assistant professor (G.T)
Dept of Political science
C.M.j College Donwarihat
Email-Kdkbharti08@gmail.com
B.A Part--2 Paper--4 Date--31-07-2020
Mo.No--9234999361.

दबाव समूह क्या है?अमेरिका में दबाव गुटों की भूमिका की विवेचना करें।

दबाव समूह अपनी प्रकृति से हित समूहों की तरह न तो पूर्णतः अराजनितिक होते हैं और न ही दलों की तरह पूर्णतः राजनीतिक।ये औपचारिक रूप से संगठित व्यक्ति समूह होते हैं जिनके निर्माण का मुख्य आधार विशिष्ट हितों की प्राप्ति होता है।ये हर तरह की राजनीतिक व्यवस्थाओं में देखें जा सकते हैं।वै ही व्यक्ति इसके सदस्य होते हैं जिनके हितों की सिद्धि इनके द्वारा होती है।ये अपने आप में राजनितिक संगठन नहीं होते किन्तु किसी खास विषय पर राजनीतिक प्रक्रिया को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं ।ये स्थायी नहीं होते अतः बनते बिगड़ते रहते हैं।

जब कोई छोटा अथवा बड़ा हित संगठित रूप धारण कर अपने सदस्यों के हितों की रक्षा करता है तो उसे हित समूह कहते हैं और जब कोई हित समूह अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए सरकार से सहायता चाहने लगता है अथवा राजनीतिक संरक्षण प्राप्त करना चाहता है तब उसे दबाव समूह कहते हैं।इनका रूप ऐच्छिक होता है।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के दबाव समूहों ने वहाँ की सशक्त राजनीति में जो योगदान दिया है वह विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं मिलता।यहाँ उन्होंने अदृश्य साम्राज्य का रूप ले लिया है।ये काँग्रेस के सदस्यों को व्यक्तिगत रूप से प्रभावित करते हैं।अमेरिका में ये बहुत अधिक शक्तिशाली और ताकतवर है।ये किसी भी विधेयक के पक्ष विपक्ष में मतदान करने के लिए सदस्यों पर जोर दे सकते हैं।उन्हें अपने प्रभाव के लिए राजनितिक दलों का सहारा नहीं लेना पड़ता।आज अमेरिका में अनगिनत दबाव समूह पाये जाते हैं।इनकी संख्या इतनी है कि उनकी पूरी सूची तैयार कर पाना मुश्किल है।फिर भी बड़े गुट समूह मुख्यतः आर्थिक हितों से संबंधित है और वह भी खासकर व्यपार से।मजदूरों और कृषि से संबंधित अनेकानेक गुट हैं दबाव समूहों का एक दूसरा वर्ग देशभक्त और समाजसेवी संगठनों का है।तीसरा वर्ग सुधारक गुटों का है।

अमेरिका में छोटे-बड़े सभी दबाव समूहों का स्वभाव तथा उद्देश्य भिन्न भिन्न है।वे नैतिक मानव कल्याण के उद्देश्य को लेकर राजनीतिक तथा आर्थिक हितों की प्राप्ति के लिए कायम किए गए हैं।अमेरिका में दबाव समूह सरकारों के अन्तराल मे तथा निर्वाचनों की अवधि के विचार शैथिल्य को रोकते हैं तथा जनजीवन में राजनीति के प्रति उत्साह एवं रूची उत्पन्न करते हैं।दबाव समूह लोकमत और सरकारी नीतियों के बीच एक बाँध के समान काम करते हैं।अमेरिका जैसे बड़े देश में जहाँ हितों और व्यवसायों की भरमार है, प्रतिनिधित्व के दृष्टिकोण से दबाव समूहों का महत्व बढ़ जाता है

दबाव समूहों का पहला तकनीक निर्वाचनों में भाग लेकर देश की राजनीति को प्रभावित करना है।वे प्रतिनिधियों के चुनाव में सक्रिय भाग लेते हैं अपनी इच्छा के अनुसार उम्मीदवारों का चयन कराना और उन्हें विजेता बनाना उनका एक मुख्य काम है।अमेरिका में यह कार्य इतना व्यापक और इतनी तत्परता से किया जाता है कि हित समूह यह चिन्ता नहीं करते कि उनका उम्मीदवार रिपब्लिकन है या डेमोक्रेट।उम्मीदवार किसी भी दल का हो,जिससे उनका हित सधता हो ,उसे ही हित समूह चुनाव में मदद करता है।

काँग्रेस को प्रभावित करने के लिए लाँबी प्रचारक प्रत्यक्ष और परोक्ष साधनों का प्रयोग करते हैं।वे स्वयं तो काँग्रेस के सदस्यों को प्रभावित करते ही है।साथ ही उन पर परोक्ष रूप से प्रभाव डालने का भी प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए वे काँग्रेस के सदस्यों से इस ढंग से अपील करते हैं कि वे किसी विधेयक के विरुद्ध मत दे,क्योंकि वह साभ्यवादी अथवा समाजवादी है और इसलिए गैर अमेरिकी है।वे यह प्रयत्न करते हैं कि लोकमत को अपने पक्ष में तैयार करें।जिससे मतदाताओं का दबाव सदस्यों पर पड़े।

प्रभावक गुटों की तीसरी कार्यविधि समितियों के माध्यम से काँग्रेस सदस्यों को प्रभावित करना है।वे काँग्रेस सदस्य को यह विश्वास दिलाने का भरसक प्रयास करते हैं कि उन्हें उसके निर्वाचन क्षेत्र का पूरा सर्मथन प्राप्त है और समूह विधि पारित होने अथवा रूकने से उसके निर्वाचकों को समान लाभ होगा, तथा वे सभी यही चाहते हैं जिसकी वकालत गुट कर रहा है।इस कठिन कार्य को वे बडी चतुराई से करते हैं।

आजकल अमेरिका में दबाव समूहों का महत्व पहले की अपेक्षा बहुत ही अधिक बढ़ गया है।शुरू में इस देश में ऐसे गुटों को शंका की दृष्टि से देखा जाता था।लोग इन्हें लोकतंत्र के लिए खतरनाक समझते थे।कार्ल जै,फ्रेडरिक ने लिखा है कि-"गत पीढ़ी में इन गुटों को नैतिक क्रोध और भय की दृष्टि से देखा जाता था।गन्दे राजनीतिज्ञ तथा राजनीतिशास्त्र के प्रबुद्ध विद्यार्थी दोनों ही इन्हें घृणास्पद समझते थे।इन्हें ऐसे दुष्ट और पापी शक्ति समझा जाता था जो आधुनिक लोकतंत्र और सरकार की जड़ उखाड़ने के उद्यत थे।लेकिन आज बात कुछ और ही है।

यह स्पष्ट है कि दबाव समूह आज न केवल अपरहार्य हैं बल्कि उनका औचित्य भी न्यायसंगत है।ये सरकार की नीतियों के निर्माण में सहायता करते हैं।ये विभिन्न हितों मजदूरों, शिक्षकों, व्यापरियों आदि की आवाज संगठित रूप से सरकार तक पहुँचाने में सफल रहे हैं।आज यह तर्क पुराना पड़ गया है कि लाँबिइंग एक भ्रष्ट और बेईमान तरीका है।यदि कोई दबाव समूह नियंत्रित तरीकों से काम करते हैं या अगर भ्ष्टाचार का रास्ता अपनाता है तो यह सरकार की कमजोरी है।यही कारण है कि अमेरिका में दबाव समूह को एक सही और दुरुस्त राजनीतिक अस्त्र के रूप में अपना लिया है।इतना ही नहीं, दबाव समूह व्यक्ति की गरिमा की रक्षा करने और उनके विवेक को बढा़ने में भी सहायता पहुँचाते हैं।

आगे, धन्यवाद।

2020-07-31
From vivo Not

Scanned with CamScanner